नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 15 दिसंबर 2007 3

नवभारत टाइम्स

बिजली निजीकरण से बदली तस्वीर : वालिया

वरिष्ठ संवाददाता ‖ नई दिल्ली

दिल्ली के लोग शुक्रवार को गंभीर बिजली संकट से जूझते रहे लेकिन दिल्ली सरकार के ऊर्जा मंत्री बिजली कंपनियों की तारीफ में कसीदे पढ़ते नजर आए। उनका कहना है कि दिल्ली में बिजली क्षेत्र का निजीकरण कामयाबी की शानदार कहानी है। उनका यह भी कहना है कि राजधानी बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता से भी आगे पहुंचने की राह पर है।

बिजली आपूर्ति की डगमगाती स्थिति को लेकर हाल-फिलहाल तक बिजली कंपनियों को आड़े हाथों लेने वाले डॉ. वालिया ने अपने सुर बदल लिए हैं। प्रगति मैदान में पावर एशिया कंपनी के उद्घाटन के मौके पर उन्होंने कहा कि बिजली के निजीकरण से सामाजिक क्षेत्र और बुनियादी सुविधाओं के विकास में बढ़ोतरी हुई है क्योंकि निजीकरण से पहले दिल्ली बिजली बोर्ड को 1000 से 1200 करोड़ रुपये तक की आर्थिक सहायता दी जा रही थी। बोर्ड की देनदारियां भी 23 हजार करोड़ रुपये से अधिक हो गई थीं। अब यह सारी रकम विकास कार्यों में खर्च की जा रही है।

दिल्ली में बिजली क्षेत्र का निजीकरण कामयाबी की शानदार कहानी है। बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता से आगे बढ़ रही है दिल्ली

वालिया के अनुसार, पहले बिजली की स्थिति बहुत चिंताजनक थी। अब आम आदमी की संतुष्टि के लिहाज से काफी सुधार आया है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि बिजली कंपनियों को समझा दिया गया है कि उनके लिए अब बिना वजह लोड शेडिंग करना मुमकिन नहीं होगा। उन्होंने यह भी कहा कि राजधानी दिल्ली बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता से भी आगे पहुंचने की राह पर है। यह स्थिति तीन साल बाद आ जाएगी जब राजधानी को कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी करनी है। बिजली उत्पादन क्षमता दो हजार मेगावॉट से अधिक बढ़ाने के लिए झज्जर में विद्युत केंद्र लगाने के लिए हरियाणा के साथ समझौता किया गया है। उन्होंने आम लोगों से बिजली की बचत करने के लिए कम बिजली खपत वाले उपकरणों का इस्तेमाल करने की अपील भी की।